



Nilu kumari

14 Jun 1992

06:15 AM

Bihar Sharif

Model: Web-MyKundli

Order No: 121322801

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 14/06/1992
दिन _____: रविवार
जन्म समय _____: 06:15:00 घंटे
इष्ट _____: 03:12:08 घटी
स्थान _____: Bihar Sharif
राज्य _____: Bihar
देश _____: India

अक्षांश _____: 25:07:00 उत्तर
रेखांश _____: 85:25:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:11:40 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 06:26:40 घंटे
वेलान्तर _____: -00:00:14 घंटे
साम्पातिक काल _____: 23:56:56 घंटे
सूर्योदय _____: 04:58:08 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:39:08 घंटे
दिनमान _____: 13:41:00 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: ग्रीष्म
सूर्य के अंश _____: 29:27:51 वृष
लग्न के अंश _____: 16:07:56 मिथुन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मिथुन - बुध
राशि-स्वामी _____: वृश्चिक - मंगल
नक्षत्र-चरण _____: अनुराधा - 4
नक्षत्र स्वामी _____: शनि
योग _____: साध्य
करण _____: वणिज
गण _____: देव
योनि _____: मृग
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: कीटक
वर्ग _____: सर्प
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: ने-नैनी
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मिथुन

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1914	ज्येष्ठ	24
पंजाबी	संवत : 2049	आषाढ़	1
बंगाली	सन् : 1399	ज्येष्ठ	31
तमिल	संवत : 2049	वैकासी	32
केरल	कोल्लम : 1167	इदवम	32
नेपाली	संवत : 2049	आषाढ़	1
चैत्रादि	संवत : 2049	ज्येष्ठ	शुक्ल 14
कार्तिकादि	संवत : 2049	ज्येष्ठ	शुक्ल 14

पंचांग

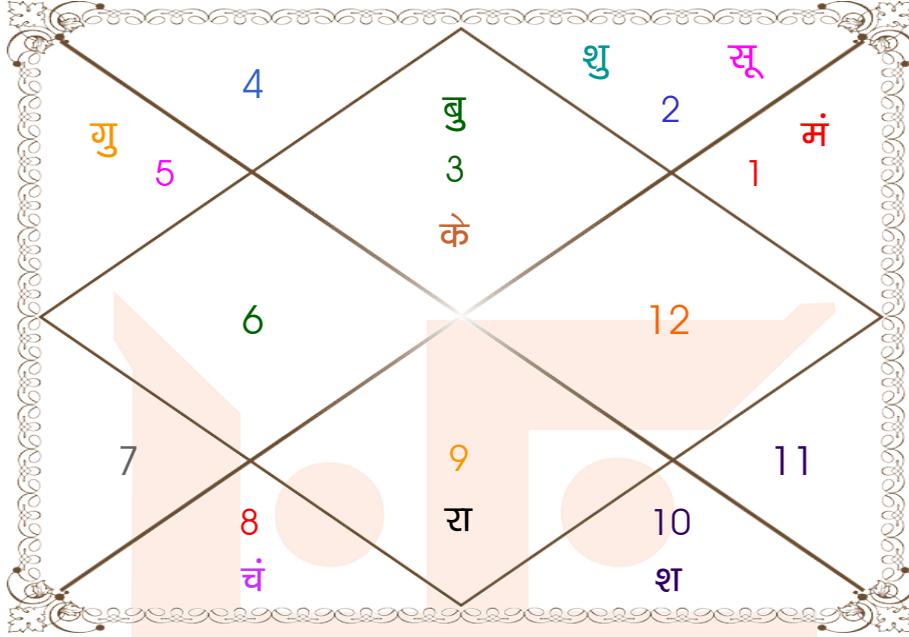
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 14
तिथि समाप्ति काल _____ : 09:23:42
जन्म तिथि _____ : 14
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : अनुराधा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 07:38:26 घंटे
जन्म योग _____ : अनुराधा
सूर्योदय कालीन योग _____ : साध्य
योग समाप्ति काल _____ : 20:19:08 घंटे
जन्म योग _____ : साध्य
सूर्योदय कालीन करण _____ : वणिज
करण समाप्ति काल _____ : 09:23:42 घंटे
जन्म करण _____ : वणिज
भयात _____ : 59:16:36
भभोग _____ : 62:45:12
भोग्य दशा काल _____ : शनि 1 वर्ष 0 मा 15 दि

घात चक्र

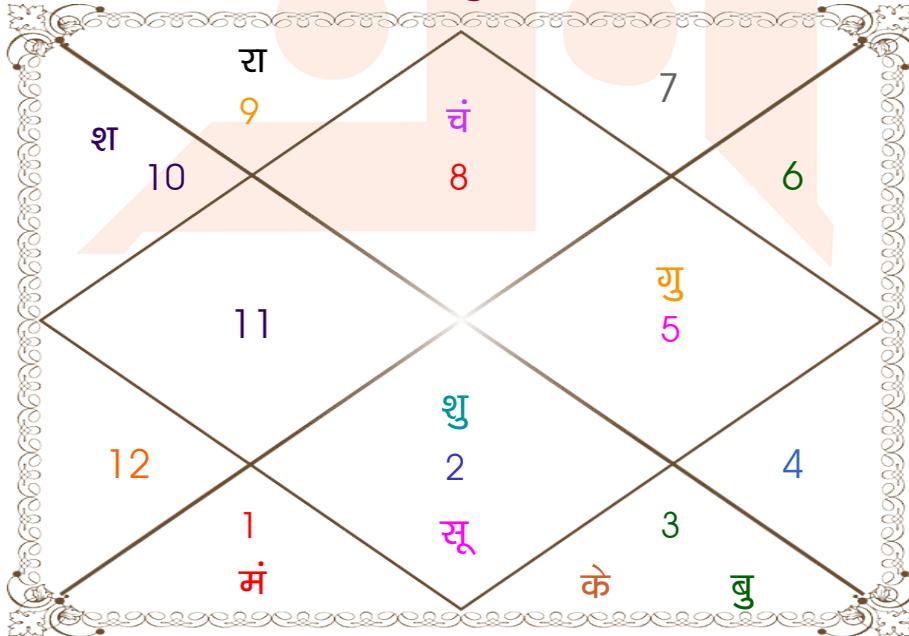
मास _____ : आश्विन
तिथि _____ : 1-6-11
दिन _____ : शुक्रवार
नक्षत्र _____ : रेवती
योग _____ : व्यतिपात
करण _____ : गर
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : गरुड़
लग्न _____ : वृश्चिक
सूर्य _____ : मकर
चन्द्र _____ : धनु
मंगल _____ : कुम्भ
बुध _____ : वृश्चिक
गुरु _____ : मीन
शुक्र _____ : मेष
शनि _____ : कर्क
राहु _____ : वृष

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

	मं	शु सू	के ल बु
श			गु
रा	चं		

लग्न कुंडली

के बु	शु सू	मं	
	ल		
			श
गु			रा चं

विंशोत्तरी
शनि 1वर्ष 0मा 15दि
शनि

14/06/1992

30/06/2094

शनि	30/06/1993
बुध	30/06/2010
केतु	30/06/2017
शुक्र	30/06/2037
सूर्य	30/06/2043
चन्द्र	30/06/2053
मंगल	30/06/2060
राहु	30/06/2078
गुरु	30/06/2094

योगिनी

भ्रामरी 0वर्ष 2मा 19दि
भ्रामरी

02/09/2024

02/09/2028

भ्रामरी	11/02/2025
भद्रिका	02/09/2025
उल्का	04/05/2026
सिद्धा	12/02/2027
संकटा	03/01/2028
मंगला	12/02/2028
पिंगला	03/05/2028
धान्या	02/09/2028

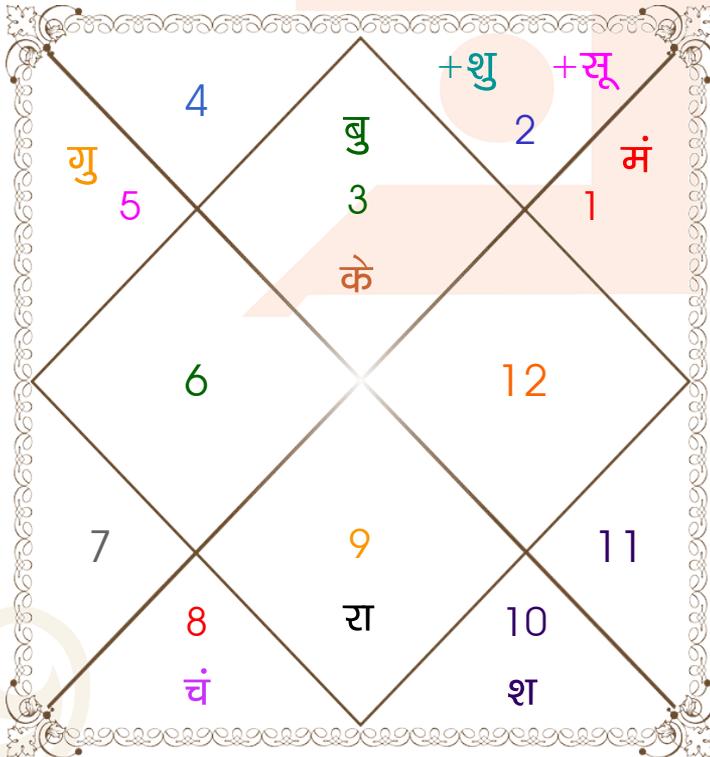
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मिथु	16:07:56	320:29:05	आर्द्रा	3	6	बुध	राहु	शुक्र	---
सूर्य			वृष	29:27:51	00:57:18	मृगशिरा	2	5	शुक्र	मंगल	शनि	शत्रु राशि
चंद्र			वृश्चि	15:56:03	12:38:40	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	गुरु	नीच राशि
मंगल			मेष	05:46:37	00:44:18	अश्विनी	2	1	मंगल	केतु	राहु	मूलत्रिकोण
बुध			मिथु	14:39:53	01:53:53	आर्द्रा	3	6	बुध	राहु	केतु	स्वराशि
गुरु			सिंह	13:40:02	00:07:09	पूर्वाषाढा	1	11	सूर्य	शुक्र	शुक्र	मित्र राशि
शुक्र	अ		वृष	29:33:30	01:13:42	मृगशिरा	2	5	शुक्र	मंगल	शनि	स्वराशि
शनि	व		मक	24:30:49	00:01:35	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगल	राहु	स्वराशि
राहु	व		धनु	06:54:23	00:00:35	मूल	3	19	गुरु	केतु	राहु	नीच राशि
केतु	व		मिथु	06:54:23	00:00:35	आर्द्रा	1	6	बुध	राहु	राहु	नीच राशि
हर्ष	व		धनु	23:12:08	00:02:08	पूर्वाषाढा	3	20	गुरु	शुक्र	शनि	---
नेप	व		धनु	24:28:41	00:01:26	पूर्वाषाढा	4	20	गुरु	शुक्र	बुध	---
प्लूटो	व		तुला	26:57:26	00:01:20	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	शुक्र	---
दशम भाव			मीन	05:24:49	--	उ०भाद्रपद	--	26	गुरु	शनि	शनि	--

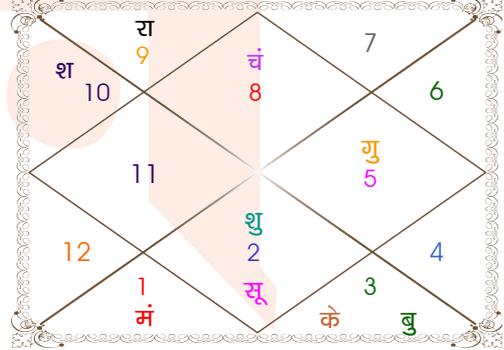
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:45:23

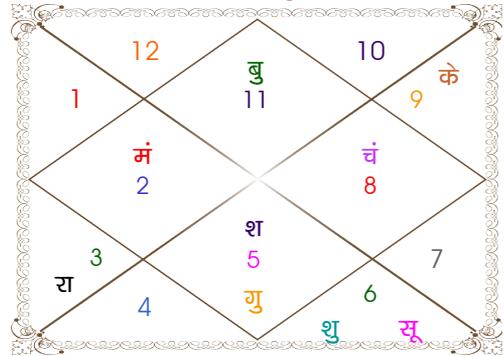
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	वृष 29:20:45	मिथुन 16:07:56
2	मिथुन 29:20:45	कर्क 12:33:34
3	कर्क 25:46:23	सिंह 08:59:12
4	सिंह 22:12:01	कन्या 05:24:49
5	कन्या 22:12:01	तुला 08:59:12
6	तुला 25:46:23	वृश्चिक 12:33:34
7	वृश्चिक 29:20:45	धनु 16:07:56
8	धनु 29:20:45	मकर 12:33:34
9	मकर 25:46:23	कुम्भ 08:59:12
10	कुम्भ 22:12:01	मीन 05:24:49
11	मीन 22:12:01	मेष 08:59:12
12	मेष 25:46:23	वृष 12:33:34

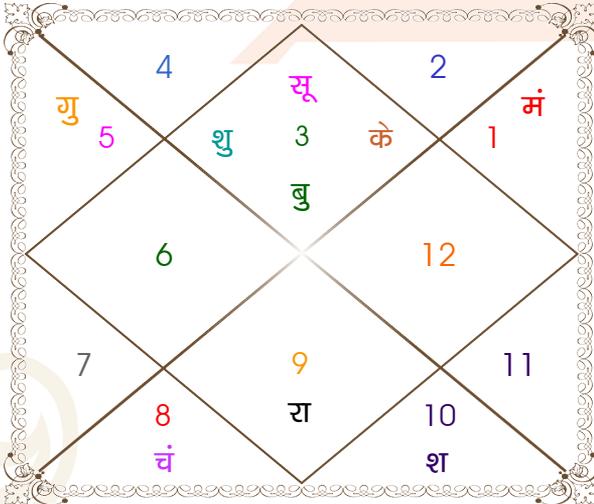
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मिथुन	16:07:56
2	कर्क	09:31:29
3	सिंह	05:13:35
4	कन्या	05:24:49
5	तुला	09:43:55
6	वृश्चिक	14:23:51
7	धनु	16:07:56
8	मकर	09:31:29
9	कुम्भ	05:13:35
10	मीन	05:24:49
11	मेष	09:43:55
12	वृष	14:23:51

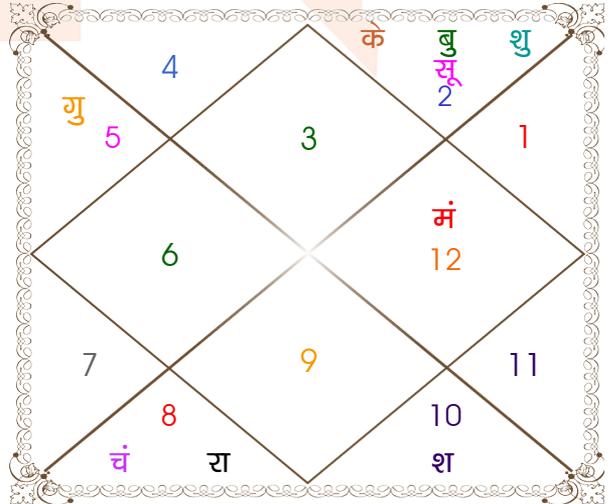
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 1 वर्ष 0 मास 15 दिन

शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
14/06/1992	30/06/1993	30/06/2010	30/06/2017	30/06/2037
30/06/1993	30/06/2010	30/06/2017	30/06/2037	30/06/2043
00/00/0000	बुध 27/11/1995	केतु 26/11/2010	शुक्र 29/10/2020	सूर्य 18/10/2037
00/00/0000	केतु 23/11/1996	शुक्र 26/01/2012	सूर्य 30/10/2021	चंद्र 18/04/2038
00/00/0000	शुक्र 24/09/1999	सूर्य 02/06/2012	चंद्र 30/06/2023	मंगल 24/08/2038
00/00/0000	सूर्य 30/07/2000	चंद्र 01/01/2013	मंगल 30/08/2024	राहु 19/07/2039
00/00/0000	चंद्र 30/12/2001	मंगल 31/05/2013	राहु 30/08/2027	गुरु 06/05/2040
00/00/0000	मंगल 27/12/2002	राहु 18/06/2014	गुरु 30/04/2030	शनि 18/04/2041
00/00/0000	राहु 15/07/2005	गुरु 25/05/2015	शनि 30/06/2033	बुध 22/02/2042
14/06/1992	गुरु 21/10/2007	शनि 03/07/2016	बुध 30/04/2036	केतु 30/06/2042
गुरु 30/06/1993	शनि 30/06/2010	बुध 30/06/2017	केतु 30/06/2037	शुक्र 30/06/2043

चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
30/06/2043	30/06/2053	30/06/2060	30/06/2078	30/06/2094
30/06/2053	30/06/2060	30/06/2078	30/06/2094	15/06/2112
चंद्र 30/04/2044	मंगल 26/11/2053	राहु 13/03/2063	गुरु 17/08/2080	शनि 03/07/2097
मंगल 29/11/2044	राहु 15/12/2054	गुरु 05/08/2065	शनि 01/03/2083	बुध 13/03/2100
राहु 31/05/2046	गुरु 20/11/2055	शनि 11/06/2068	बुध 06/06/2085	केतु 22/04/2101
गुरु 30/09/2047	शनि 29/12/2056	बुध 30/12/2070	केतु 12/05/2086	शुक्र 22/06/2104
शनि 30/04/2049	बुध 27/12/2057	केतु 17/01/2072	शुक्र 10/01/2089	सूर्य 04/06/2105
बुध 30/09/2050	केतु 25/05/2058	शुक्र 17/01/2075	सूर्य 30/10/2089	चंद्र 03/01/2107
केतु 01/05/2051	शुक्र 25/07/2059	सूर्य 12/12/2075	चंद्र 01/03/2091	मंगल 12/02/2108
शुक्र 29/12/2052	सूर्य 30/11/2059	चंद्र 12/06/2077	मंगल 05/02/2092	राहु 19/12/2110
सूर्य 30/06/2053	चंद्र 30/06/2060	मंगल 30/06/2078	राहु 30/06/2094	गुरु 15/06/2112

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 1 वर्ष 0 मा 19 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - राहु 30/08/2024 30/08/2027	शुक्र - गुरु 30/08/2027 30/04/2030	शुक्र - शनि 30/04/2030 30/06/2033	शुक्र - बुध 30/06/2033 30/04/2036	शुक्र - केतु 30/04/2036 30/06/2037
राहु 10/02/2025 गुरु 06/07/2025 शनि 27/12/2025 बुध 31/05/2026 केतु 03/08/2026 शुक्र 01/02/2027 सूर्य 28/03/2027 चंद्र 27/06/2027 मंगल 30/08/2027	गुरु 07/01/2028 शनि 09/06/2028 बुध 25/10/2028 केतु 21/12/2028 शुक्र 02/06/2029 सूर्य 20/07/2029 चंद्र 09/10/2029 मंगल 05/12/2029 राहु 30/04/2030	शनि 30/10/2030 बुध 12/04/2031 केतु 19/06/2031 शुक्र 29/12/2031 सूर्य 24/02/2032 चंद्र 31/05/2032 मंगल 06/08/2032 राहु 27/01/2033 गुरु 30/06/2033	बुध 24/11/2033 केतु 23/01/2034 शुक्र 14/07/2034 सूर्य 04/09/2034 चंद्र 29/11/2034 मंगल 29/01/2035 राहु 03/07/2035 गुरु 18/11/2035 शनि 30/04/2036	केतु 25/05/2036 शुक्र 04/08/2036 सूर्य 25/08/2036 चंद्र 30/09/2036 मंगल 24/10/2036 राहु 27/12/2036 गुरु 22/02/2037 शनि 01/05/2037 बुध 30/06/2037
सूर्य - सूर्य 30/06/2037 18/10/2037	सूर्य - चंद्र 18/10/2037 18/04/2038	सूर्य - मंगल 18/04/2038 24/08/2038	सूर्य - राहु 24/08/2038 19/07/2039	सूर्य - गुरु 19/07/2039 06/05/2040
सूर्य 05/07/2037 चंद्र 15/07/2037 मंगल 21/07/2037 राहु 06/08/2037 गुरु 21/08/2037 शनि 07/09/2037 बुध 23/09/2037 केतु 29/09/2037 शुक्र 18/10/2037	चंद्र 02/11/2037 मंगल 12/11/2037 राहु 10/12/2037 गुरु 03/01/2038 शनि 01/02/2038 बुध 27/02/2038 केतु 10/03/2038 शुक्र 09/04/2038 सूर्य 18/04/2038	मंगल 26/04/2038 राहु 15/05/2038 गुरु 01/06/2038 शनि 21/06/2038 बुध 09/07/2038 केतु 17/07/2038 शुक्र 07/08/2038 सूर्य 13/08/2038 चंद्र 24/08/2038	राहु 12/10/2038 गुरु 25/11/2038 शनि 16/01/2039 बुध 04/03/2039 केतु 23/03/2039 शुक्र 17/05/2039 सूर्य 02/06/2039 चंद्र 30/06/2039 मंगल 19/07/2039	गुरु 27/08/2039 शनि 12/10/2039 बुध 22/11/2039 केतु 09/12/2039 शुक्र 27/01/2040 सूर्य 11/02/2040 चंद्र 06/03/2040 मंगल 23/03/2040 राहु 06/05/2040
सूर्य - शनि 06/05/2040 18/04/2041	सूर्य - बुध 18/04/2041 22/02/2042	सूर्य - केतु 22/02/2042 30/06/2042	सूर्य - शुक्र 30/06/2042 30/06/2043	चंद्र - चंद्र 30/06/2043 30/04/2044
शनि 30/06/2040 बुध 18/08/2040 केतु 07/09/2040 शुक्र 04/11/2040 सूर्य 21/11/2040 चंद्र 20/12/2040 मंगल 10/01/2041 राहु 03/03/2041 गुरु 18/04/2041	बुध 01/06/2041 केतु 19/06/2041 शुक्र 10/08/2041 सूर्य 25/08/2041 चंद्र 20/09/2041 मंगल 08/10/2041 राहु 24/11/2041 गुरु 04/01/2042 शनि 22/02/2042	केतु 02/03/2042 शुक्र 23/03/2042 सूर्य 30/03/2042 चंद्र 09/04/2042 मंगल 17/04/2042 राहु 06/05/2042 गुरु 23/05/2042 शनि 12/06/2042 बुध 30/06/2042	शुक्र 30/08/2042 सूर्य 17/09/2042 चंद्र 18/10/2042 मंगल 08/11/2042 राहु 02/01/2043 गुरु 20/02/2043 शनि 18/04/2043 बुध 09/06/2043 केतु 30/06/2043	चंद्र 26/07/2043 मंगल 13/08/2043 राहु 27/09/2043 गुरु 07/11/2043 शनि 25/12/2043 बुध 06/02/2044 केतु 24/02/2044 शुक्र 15/04/2044 सूर्य 30/04/2044

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

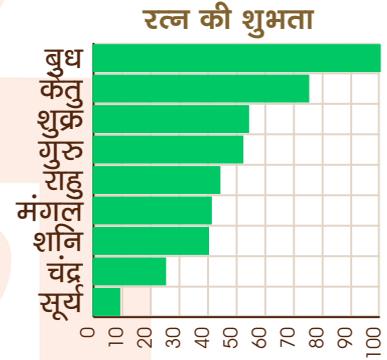
मूलांक	5
भाग्यांक	5
मित्र अंक	3, 5, 9
शत्रु अंक	2, 4, 8
शुभ वर्ष	23,32,41,50,59
शुभ दिन	बुध, शुक्र, शनि
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र, शनि
मित्र राशि	कर्क, सिंह
मित्र लग्न	कन्या, कुम्भ, मेष
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	स्वास्थ्य, सुख
लहसुनिया	केतु	75%	स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	54%	कम खर्च, सन्तति सुख
पुखराज	गुरु	52%	पराक्रम, दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
गोमेद	राहु	44%	दाम्पत्य कष्ट, पराक्रम हानि
मूंगा	मंगल	41%	हानि, शत्रु व रोग
नीलम	शनि	40%	दुर्घटना, नेष्ट भाग्य
मोती	चंद्र	25%	शत्रु व रोग, धन हानि
माणिक्य	सूर्य	9%	व्यय, पराक्रम हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	30/06/1993	0%	0%	16%	100%	52%	61%	57%	53%	62%
बुध	30/06/2010	22%	0%	41%	100%	52%	61%	40%	44%	75%
केतु	30/06/2017	0%	0%	52%	100%	52%	61%	15%	19%	88%
शुक्र	30/06/2037	0%	0%	41%	100%	52%	67%	51%	53%	81%
सूर्य	30/06/2043	34%	38%	52%	100%	58%	34%	15%	19%	62%
चंद्र	30/06/2053	22%	50%	41%	100%	52%	54%	40%	19%	62%
मंगल	30/06/2060	22%	38%	58%	100%	58%	54%	40%	19%	81%
राहु	30/06/2078	0%	0%	16%	100%	52%	61%	51%	59%	62%
गुरु	30/06/2094	22%	38%	52%	100%	64%	34%	40%	44%	75%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/03/1993-15/10/1993 10/11/1993-02/06/1995 10/08/1995-16/02/1996
अष्टम स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020 -----

द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049 -----

तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076 11/10/2076-15/01/2079 -----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया

फल

शुभ
सम
शुभ
सम
शुभ

क्षेत्र

भाग्योदय
स्वास्थ्य
सन्तति सुख
शत्रु से कष्ट
दम्पति

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

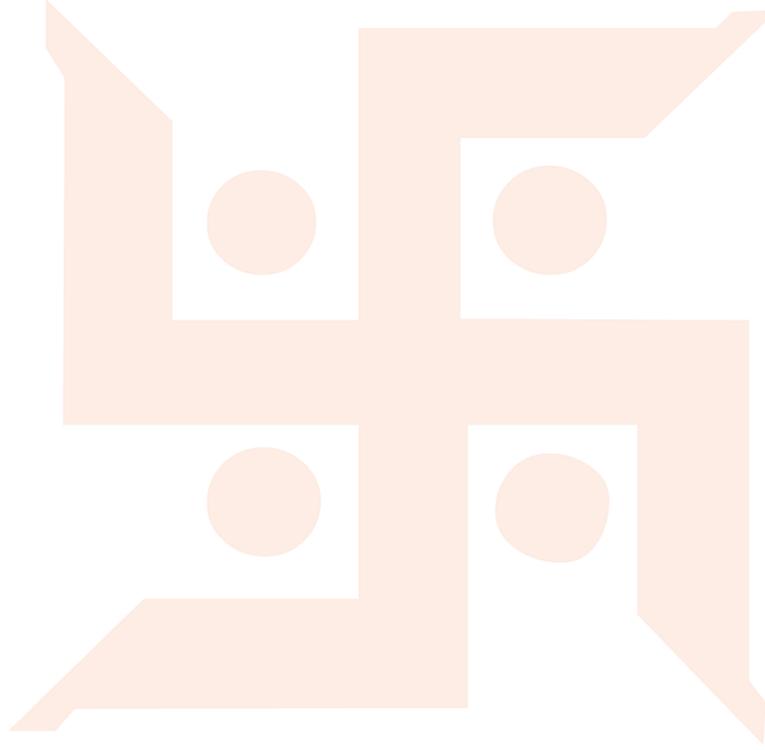
**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है। यह भाव आय समृद्धि आदि का प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा। साथ ही आपके आय स्रोत भी एक से अधिक रहेंगे। जिससे धनऐश्वर्य से आप सर्वदा युक्त रहेंगी। जीवन में जमीन जायदाद से भी आपको प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से नित्य लाभ होता रहेगा तथा इसके कय विकय से भी आप प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। समाज में आप एक प्रतिष्ठित महिला होंगी। सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। इसके साथ ही किसी विशिष्ट सम्मान भी आपको प्राप्त हो सकती है। इस प्रकार धनऐश्वर्य से युक्त होकर आप अपना जीवन यापन करेंगी।

एकादश भाव से द्वितीय भाव पर चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी। यदाकदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद या तनाव भी उत्पन्न होंगे लेकिन इसका प्रभाव अल्प ही रहेगा। वाणी से भी आप यदा कदा कठोरता का प्रदर्शन करेंगी एवं प्रारंभिक शिक्षा अर्जित करने में भी न्यूनधिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। पंचम भाव पर मंगल की दृष्टि से संतति से आप युक्त रहेगी लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है। साथ ही उनसे आपको जीवन में सुख एवं सहयोग भी सामान्य ही प्राप्त होगा। उच्च शिक्षा को आप परिश्रम पूर्वक प्राप्त करेंगी तथा सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी समय समय पर लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा। षष्ठ भाव में मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रु वर्ग को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगी। साथ ही किसी प्रतियोगी परीक्षा मुकद्दमें या चुनाव आदि में भी आपको सफलता प्राप्त होती रहेगी। लेकिन शरीर में यदा कदा गर्मी या पित आदि से कोई परेशानी हो सकती है। परन्तु इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। साथ ही मामा आदि से भी सुख सहयोग की न्यूनता रहेगी परन्तु आपका सामान्य जीवन सुखी रहेगा।

इस प्रकार आप धनऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे तथा यत्न पूर्वक पारिवारिक जनों को आधुनिक सुख सुविधा प्रदान करने के लिए तत्पर रहेगी एवं इसमें आपको सफलता भी मिलेगी। साथ ही पारिवारिक जनों से भी आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा सभी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। अतः आपके परस्पर संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृओं का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुण्डली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

वृष राशि में रवि हो तो जातक शान्त, व्यवहार कुशल, पाप भीरु, स्वाभिमानी मुखरोगी एवं स्त्रीद्वेषी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही उनकी प्रवृत्ति पुण्य एवं दान संबंधी कार्यों को करने की रहेगी अतः आपको भी वे पुण्य कार्यों की ओर प्रेरित करेंगे। साथ ही धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण आदर की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों से संबंधों में कटुता या तनाव उत्पन्न होगा परन्तु कुछ समय के बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। जीवन में आप उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगी एवं समयानुसार उनको पूर्ण सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कोई कष्ट नहीं होने देंगी।

चन्द्र

षष्ठभाव में चन्द्रमा हो तो जातक अल्पायु, आसक्त, कफरोगी, खर्चीले स्वभाववाला, नेत्ररोगी एवं भृत्यप्रिय होता है।

वृश्चिक राशि में चन्द्रमा हो तो जातक अपने माता-पिता, भाइयों आदि से अलग रहने वाला, नास्तिक, लोभी, बन्धुहीन, परस्त्रीरत, झगड़ालू, स्पष्ट वक्ता, बुरे विचार रखने वाले, दुःखी, हठी, अनैतिक विचारों वाला एवं धनी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठभाव में स्थित है। अतः आप माता की प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से वे दुर्बलता की अनुभूति करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको पूर्ण रूप से हर सम्भव सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। इसके साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में यदि कोई व्यवधान आएंगे तो उन्हें दूर करने में सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगी तथा आपकी सफलता की सर्वदा इच्छुक होंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना रखेंगी तथा हमेशा उनकी सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगी परन्तु आपके मध्य कभी कभी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे अप्रिय स्थितियां भी उत्पन्न होंगी लेकिन फिर भी सामान्य संबंध मधुर ही रहेंगे। साथ ही उनको

जीवन में वांछित सहायता एवं सहयोग प्रदान करने की भी आप इच्छुक रहेंगी।

मंगल

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

मेष राशि में मंगल हो तो जातक सत्यवक्ता, तेजस्वी, शूरवीर, नेता, साहसी, धनवान्, लोकमान्य, दानी एवं राजमान्य होता है।

आपके जन्म समय में मंगल एकादश में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप स्नेह एवं सम्मान प्राप्त करेंगी एवं जीवन के शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उनसे पूर्ण सहयोग तथा समयानुसार वांछित सहायता भी अर्जित करेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य प्रायः अच्छा ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। आपके आय साधनों की वृद्धि में भी उनका प्रमुख योगदान रहेगा। धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सुख दुःख के समय आपकी यथा शक्ति सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगे।

आपके अर्न्तमन में उनके प्रति स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में यथाशक्ति उनकी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपनी ओर से वांछित आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें कटुता का भाव उत्पन्न होगा। परन्तु यह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में भी अपना योगदान प्रदान करेंगी।

बुध

लग्न (प्रथम) में बुध हो तो जातक आस्तिक, गणितज्ञ, दीर्घायु, उदार-विनोदी, वैद्य, विद्वान, स्त्रीप्रिय, मितव्ययी एवं मधुरभाषी होता है।

मिथुन राशि में बुध हो तो जातक मधुरभाषी, शास्त्रज्ञ, लब्धप्रतिष्ठ, वक्ता, लेखक, अल्पसन्ततिवाला, विवेकी, सदाचारी, खोज के काम में चतुर, दीर्घायु, यात्रा का शौकीन, संगीत में रुचि एवं हास परिहास करने वाला होता है।

गुरु

तृतीयभाव में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, जितेन्द्रिय, लेखक, कामी, प्रवासी, स्त्रीप्रिय, व्यवसायी, मन्दाग्नि, वाहनयुक्त, पर्यटनशील, विदेशप्रिय, ऐश्वर्यवान् बहुत भाई बहन, आस्तिक एवं योगी होता है।

सिंह राशि में गुरु हो तो जातक धार्मिक, प्रेमी, कार्यकुशल, सभाचतुर शत्रुजित्, आकर्षकव्यक्तित्व, उच्चाकांक्षी, सक्रिय, सुखी, कुशाबुद्धि साहित्य की ओर झुकाव, लेखक एवं उच्च सरकारी पद पर आसीन होता है।

शुक्र

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक, मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

वृष राशि में शुक्र हो तो जातक सुन्दर, ऐश्वर्यवान्, दानी, सदाचारी, सात्त्विक, परोपकारी, अनेक शास्त्रज्ञ, दृढ़, स्वतन्त्रकामुक, शौकीन तबीयत, संगीत-नृत्य तथा अन्य कलाओं में रुचि एवं आलसी होता है।

शनि

अष्टम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान् स्थूलशरीर, उदार प्रकृति, कपटी, गुप्तरोगी, वाचाल, डरपोक, कुष्ठरोगी एवं धूर्त होता है।

मकर राशि में शनि हो तो जातक कुशा बुद्धि, परिश्रमी, आस्तिक भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, अच्छा घरेलू जीवन, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला एवं दार्शनिक होता है।

राहु

सप्तम भाव में राहु हो तो चतुर, लोभी, दुराचारी, दुष्कर्मी वातरोगजनक, भ्रमणशील, व्यापार से हानिदायक एवं स्त्रीनाशक होता है।

धनु राशि में राहु हो तो जातक प्रारम्भिक जीवन में सुखी, दत्तक जाने वाल एवं मित्र द्रोही होता है।

केतु

लग्न (प्रथम) में केतु हो तो जातक चंचल मूर्ख दुराचारी, भीरु तथा वृश्चिक राशि में हो तो सुखकारक, धनी एवं परिश्रमी होता है।

मिथुन राशि में केतु हो तो जातक वायुरोग से पीड़ित, अभिमानी सरलता से सन्तुष्ट होने वाला, अल्पायु एवं छोटी सी बात पर क्रोधित हो जाने वाला होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र
(30/06/2017 - 30/06/2037)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 30/06/2017 को आरम्भ और 30/06/2037 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र द्वादश भाव में स्थित है। यह एक शुभ ग्रह है जो दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। इसकी मूल त्रिकोण राशि तुला है। यह कन्या राशि में निम्न का तथा मीन राशि में उच्च का हो जाता है। यह कला, संगीत, ड्रामा, भावनात्मक आनन्द, स्वाद, फैशन, डिजाइनिंग तथा सुखमय, जीवन का द्योतक है। द्वादश भाव में स्थित होकर यह आपकी जन्मकुण्डली के षष्ठ भाव पर कारकत्व का प्रभाव डाल रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है हानि, फिजूलखर्ची, कड़ी मजदूरी, अनुदान, पारिवार में फूट, धोखा, दुर्भाग्य, कैद, हत्या, कपट, पैर, बारीं आँख, शयन सुख, ऋण और विदेश प्रवास का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र द्वादश भाव में स्थित है जो आपके अच्छे स्वास्थ्य को सुनिश्चित करता है तथा कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या आपको नहीं होगी। आपको सभी प्रकार का आराम और आनन्द प्राप्त होगा।

अर्थ संपत्ति :

महादशा स्वामी शुक्र द्वादश भाव में स्थित है तथा इस भाव के कारकत्व की प्रबलित कर रहा है। इस दशा काल में आप उपार्जन तथा चल-अचल संपत्ति अर्जित करने की कोशिश करेंगे। आप अपने जन्म स्थल से दूर जा सकते हैं।

व्यवसाय :

अपने व्यावसायिक जीवन में आप एक जगह से दूसरी जगह जाते रहेंगे और एक बैरागी जीवन व्यतीत करेंगे और अन्ततः मोक्ष प्राप्त करेंगे। आपकी व्यावसायिक स्थिति सुदृढ़ होगी और धार्मिक या ऐसी किसी अन्य संस्था के लिए काम करेंगे जहाँ आपकी आध्यात्मिक मानसिकता प्रबलित होगी।

परिवारक जीवन :

आप भावुक तथा विपरीत लिंग के लोगों की ओर आकृष्ट होंगे। आपका पारिवारिक जीवन आनन्दमय होगा। आपके जीवन-साथी आपका सहयोग करेंगे और आप घर-परिवार के मैत्रीपूर्ण वातावरण का आनन्द उठाएंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

यह अवधि उत्तम शिक्षा के लिए अनुकूल होगी। आप साहित्यक गतिविधियां जारी रखेंगे।

**अंतर्दशा :- शुक्र - राहु
(30/08/2024 - 30/08/2027)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 30/06/2017 को प्रारंभ होकर 30/06/2037 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 3 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 30/08/2024 को प्रारंभ होकर 30/08/2027 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव आत्मीय संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन को खतरों का परिचायक है। राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है और न ही यह किसी राशि का स्वामी होता है। इसका शुभ/अशुभ प्रभाव इसकी स्थिति, भाव और राशि के अनुसार होता है।

सप्तम भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के 7वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपका निम्न कोटि के लोगों से प्रेम प्रसंग हो सकता है। गरिष्ठ भोजन के शौकीन हो सकते हैं जिससे बीमार हो सकते हैं।

अरिष्ठ से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, दूध और गंगाजल से धोकर, प्रार्थना उपरांत बायें हाथ की मध्यमा अंगुली में रात्रि भोजन के उपरांत धारण करें।

**अंतर्दशा :- शुक्र - गुरु
(30/08/2027 - 30/04/2030)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 30/06/2017 को आरंभ हुई थी और 30/06/2037 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 30/08/2027 को प्रारंभ होकर 30/04/2030 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है।

बृहस्पति शुभ ग्रह है। तृतीय भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 7, 9, 11 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप आशावादी और दार्शनिक स्वभाव के रहेंगे। कंजूसी बढ़ सकती है; संतान और परिवारजनों से लगाव में कमी आ सकती है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए गुरु के वैदिक मंत्र के 19000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- शुक्र - शनि
(30/04/2030 - 30/06/2033)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती हैं। आपके लिए यह 30/06/2017 को प्रारंभ हुई थी और वद 30/06/2037 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 30/04/2030 को प्रारंभ होकर 30/06/2033 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है।

अष्टम भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 10, 2, 5 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

शनि आयुष्कारक है। अष्टम भाव में इसकी स्थिति बहुत शुभ मानी जाती है।

इस अवधि में आपको कई जिम्मेदारियां मिलेंगी जिन्हें आप धैर्य और परिश्रम से निबाहेंगे। मार्ग में कई बाधाएं आएंगी मगर आप उन्हें हिम्मत से पार कर लेंगे। दमे और श्वसन तंत्र के रोगों से बचाव करें। बेईमानी और निर्दयता से बचें।

अरिष्ट से बचाव के लिए नीलम सोने की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली में, शनिवार को रात्रिभोज के बाद कच्चे दूध और गंगाजल से धोकर धारण करें।